Faizane Sari Saqati (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 342
Weekly Booklet : 342

सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के दस्वें पीरो मुर्शिद का तज़्किरा, बनाम

फ़ैज़ाने सरी सक़्ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

सफ़हात 28

तेरी ख़ातिर शराबी का दिल धो दिया 02
विलादत और तआ़रुफ़ 03
30 साल से नफ़्स की मुख़ालफ़त 11
मुरीद व जा नशीन को नसीह़त 23

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दावते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **फ़ैज़ाने सरी सक़ती** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

सिने त़बाअ़त : रमज़ानुल मुबारक **1445** हि., मार्च **2024** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**फ़ैज़ाने सरी सक़ती** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए Whatsapp, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

फ़ैज़ाने सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

दुआए अ़त्तार : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई 26 सफ़्हात का रिसाला : "**फ़ैज़ाने सरी सक़ती**" पढ़ या सुन ले उसे अपने औलिया की ग़ुलामी और उन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा कर मां बाप समेत बे ह़िसाब बख़्श दे । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस शख़्स के लिये वैल या'नी हलाकत है जिसे क़ियामत के दिन मेरी ज़ियारत नसीब न हो । ह़ज़रते बीबी आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन है जिसे आप की ज़ियारत नसीब नहीं होगी । इर्शाद फ़रमाया : वोह बख़ील या'नी कन्जूस है । अ़र्ज़ की : बख़ील कौन है ? फ़रमाया : बख़ील वोह है जिस के सामने मेरा नाम लिया जाए और वोह मुझ पर दुरूद न भेजे । (افضل الصلوات علی سید السادات، ص45)

ह़श्र की तीरगी, सियाही में नूर है, शम्ए पुरज़िया है दुरूद
छोड़ियो मत दुरूद को, काफ़ी ! राहे जन्नत का रहनुमा है दुरूद

(दीवाने काफ़ी, स. 23)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

हम ने तेरी ख़ातिर शराबी का दिल धो दिया

सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के एक अ़ज़ीम बुज़ुर्ग कहीं से तशरीफ़ ले जा रहे थे कि रास्ते में एक शख़्स के पास से गुज़रे जो नशे की ह़ालत में ज़मीन पर पड़ा था और उस के मुंह से शराब बह रही थी और इस ह़ालत में भी उस के मुंह से "**अल्लाह अल्लाह**" की सदाएं बुलन्द हो रही थीं। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने **अल्लाह** पाक की बारगाह में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** पाक ! येह बन्दा ऐसी ह़ालत में तेरा ज़िक्र कर रहा है जो तेरी शान के लाइक़ नहीं। फिर आप ने पानी मंगवाया और उस का मुंह धो कर चले गए। जब उस शख़्स को होश आया तो लोगों ने उसे बताया कि ज़माने के मश्हूर वलिय्युल्लाह ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه तशरीफ़ लाए थे, तुझे इस ह़ालत में देखा तो तेरा मुंह धो कर चले गए। वोह बहुत ज़ियादा शरमिन्दा हुवा और अपने नफ़्स को मलामत करते हुए कहने लगा : ऐ नफ़्स ! तेरी बरबादी हो, अगर तू **अल्लाह** पाक और उस के वलियों से भी ह़या नहीं करेगा तो किस से करेगा ? फिर उस ने शरमिन्दा हो कर अपने गुनाहों से तौबा कर ली। ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه रात जब सोए तो ख़्वाब में किसी की आवाज़ सुनी : ऐ सरी ! तू ने हमारी रिज़ा के लिये उस शराबी का मुंह धोया तो हम ने तेरे लिये उस का दिल धो दिया है। ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه जब सुब्ह़ उठे तो उस आदमी के बारे में मा'लूमात की और आख़िर कार उसे एक मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हुए पाया। जब वोह नमाज़ से फ़ारिग़ हुवा तो आप ने पूछा : ऐ मेरे भाई ! कैसे हो ? उस ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी (या'नी ऐ मेरे सरदार) ! आप मेरा ह़ाल क्यूं पूछते हैं ? ह़ालां कि उस करीम ज़ात, **अल्लाह** पाक ने आप को आगाह फ़रमा दिया

है कि उस ने आप की वज्ह से मेरा दिल धो दिया और मेरी ह़ालत सुधारी। आप ने पूछा : तुम्हें किस ने बताया ? जवाब दिया : जिस ने अपने ग़ैर (या'नी मख़्लूक़) से मेरा दिल पाक किया और मुझ पर अपने अ़फ़्वो करम और रिज़ामन्दी की बारिश बरसाई। (الروض الفائق، ص245)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

निगाहे वली में वोह तासीर देखी बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

विलादत और तआ़रुफ़

ऐ आशिक़ाने औलिया ! शराबी की ज़िन्दगी बदलने वाले बुज़ुर्ग, सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के दसवें पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सरी बिन मुग़ल्लस सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه थे। एक क़ौल के मुताबिक़ आप 155 हिजरी में बग़दाद शरीफ़ में पैदा हुए। आप का मुबारक नाम सरी जिस का मत़लब है जवां मर्द (या'नी बहादुर) और आप की कुन्यत अबुल ह़सन है। आप शुरूअ़ में "सक़त़ (या'नी मा'मूली और छोटी मोटी चीज़ें)" बेचते थे। इसी वज्ह से आप को "सक़त़ी" कहा जाता है। आप ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुरीद और ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मामूं और उस्ताद हैं। (تذکرۃ الاولیاء، 1/246)

अन्दाज़े ह़यात में तब्दीली का सबब

ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه शुरूअ़ में बग़दाद शरीफ़ के बाज़ार में दुकान पर बैठ कर सक़त़ फ़रोशी (या'नी परचून का काम) करते थे। एक दिन ख़्वाजा ह़बीब राई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه आप की दुकान पर आए, आप ने उन को

कुछ चीज़ें पेश कीं कि फ़ुक़रा में तक़्सीम कर दें, उन्हों ने फ़रमाया : خَيْرَاكَ اللهُ या'नी **अल्लाह** पाक आप को नेकी की तौफ़ीक़ दे। बस उसी दिन से दुन्या आप के दिल पर सर्द हो गई (या'नी दिल से दुन्या का ख़याल जाता रहा)। (شریف التواریخ، 1/499 ملخصًا)

शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या में ज़िक्रे ख़ैर

अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने हर मुरीद व त़ालिब को जो शजरा शरीफ़ पढ़ने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई है उस में ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वसीले से यूं दुआ की गई है :

बहरे मा'रूफ़ो सरी मा'रूफ़ दे बेख़ुद सरी

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : बहर : वासिते। **मा'रूफ़ :** भलाई। **बेख़ुद सरी :** आ़जिज़ी, फ़रमां बरदारी।

(इस शे'र में सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के नवें और दसवें पीरो मुर्शिद (या'नी ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी और ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) के वसीले से दुआ़ की गई है।)

दुआ़इया शे'र का मफ़्हूम

या अल्लाह पाक! मुझे ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वासिते नेकी और भलाई अ़त़ा फ़रमा और ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का वासिता मुझे आ़जिज़ी व इन्किसार का पैकर बना दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अ़रबी शजरा

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक अ़रबी शजरा शरीफ़, ब सीग़ए दुरूद शरीफ़ तह़रीर फ़रमाया है, उस में ह़ज़रते सरी

सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ज़िक्रे ख़ैर इस त़रह़ करते हैं : "اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَ بَارِكْ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ وَعَلَى الْمَوْلَى الشَّيْخِ سَرِّىِّ السَّقَطِيْ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ" ऐ **अल्लाह** पाक ! तू हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रह़मत व बरकत नाज़िल फ़रमा और हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आल व अस्ह़ाब और हमारे सरदार शैख़ सरी सक़ती رَضِىَ اللهُ عَنْه पर भी। (तारीख़ व शर्हे शजरए क़ादिरिय्या बरकातिया रज़विय्या, स. 109)

सब से बड़ा इबादत गुज़ार

मुर्शिदी ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपनी दुकान में एक पर्दा लगाया हुवा था जिस के पीछे तशरीफ़ ले जा कर रोज़ाना एक हज़ार नफ़्ल पढ़ते थे। (تذکرۃ الاولیاء، 1/246)

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से ज़ियादा किसी इबादत गुज़ार को नहीं देखा। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अठानवे (98) साल की उ़म्र पाई मगर इन्तिक़ाल के वक़्त के इलावा आप को कभी आराम करते हुए नहीं देखा गया। एक मरतबा आप के वज़ाइफ़ का एक ह़िस्सा आप से रह गया तो इर्शाद फ़रमाया : मेरे लिये इस की क़ज़ा मुम्किन नहीं (या'नी आप की दीनी मसरूफ़िय्यात इतनी थीं कि रह जाने वाले वज़ाइफ़ पढ़ने का कोई फ़ारिग़ वक़्त नहीं था)। (سیر اعلام النبلاء، 10/149)

एक जुम्ले ने ज़िन्दगी बदल दी

ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक दिन बग़दाद शरीफ़ की जामेअ़ मस्जिद में बयान फ़रमा रहे थे कि एक मालदार नौ जवान बेहतरीन लिबास पहने अपने दोस्तों के साथ आया और बयान सुनने लगा। दौराने बयान ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "**ह़ैरत है कि कमज़ोर कैसे क़वी की ना फ़रमानी करता है ?**" येह सुन कर उस नौ जवान के चेहरे

का रंग तब्दील हो गया और वोह बयान सुन कर चला गया। दूसरे दिन वोह ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "कल आप ने फ़रमाया था कि ह़ैरत है कि कमज़ोर कैसे क़वी की ना फ़रमानी करता है, ज़रा इस का मत़लब मुझे समझा दें।" आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "मौला से क़वी (या'नी बड़ी क़ुव्वत वाला) कोई नहीं और इन्सान से ज़ियादा कमज़ोर कोई नहीं, फिर भी बन्दा उस की ना फ़रमानी करता है।" येह सुन कर वोह नौ जवान चला गया। दूसरे दिन वोह फिर ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो उस के जिस्म पर सिर्फ़ दो सफ़ेद कपड़े थे, उस ने अ़र्ज़ की : मुझे रब्बे करीम तक पहुंचने का त़रीक़ा बता दीजिये। आप ने फ़रमाया : "अगर इ़बादत करना चाहते हो तो दिन को रोज़ा रखो और रात को नवाफ़िल में मसरूफ़ रहो।"

(روض الریاحین، ص171. بتغیر)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की नसीह़त अपने अन्दर किस क़दर सबक़ रखती है। जब कभी नफ़्सो शैत़ान गुनाह करने का ख़याल ज़ेह्न में लाएं काश ! उस वक़्त येह तसव्वुर ज़ेह्न में समा जाए कि जिस की ना फ़रमानी कर रहा हूं वोह **अल्लाह** पाक किस क़दर बड़ी त़ाक़त वाला है, अगर उस ने गुनाह करने पर सज़ा दी तो मुझ जैसा कमज़ोर इन्सान कैसे बरदाश्त कर सकेगा। **अल्लाह** पाक हमें अपनी पसन्द के काम करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

गुनाह बे अ़दद और जुर्म भी हैं ला ता 'दाद मुआ़फ़ कर दे न सह पाऊंगा सज़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

कभी पाउं न फैलाए

ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मस्जिद में पाउं फैलाए बैठे थे। ग़ैब से आवाज़ आई : क्या बादशाहों की बारगाह में यूंही बैठते हैं ? उस वक़्त से जो पाउं समेटे तो तख़्ताए ग़ुस्ल ही पर फैले, कभी सोते में भी न फैलाए।

(सब्अ़ सनाबिल, स. 131)

जिन के रुत्बे हैं सिवा उन को सिवा मुश्किल है

इल्मी मक़ामो मर्तबा

ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इल्मे ह़दीस में बड़े और मश्हूर मुह़द्दिसीने किराम से रिवायात सुनीं और अह़ादीसे मुबारका बयान फ़रमाई हैं मगर आप (एह़तियात़ के पेशे नज़र) बहुत ज़ियादा अह़ादीसे मुबारका बयान करने से रुके रहे, इसी वज्ह से आप की रिवायात कम हैं। (حلیۃ الاولیاء، 10/131)

घर से न निकलता

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को फ़रमाते हुए सुना कि अगर जुमुआ़ और जमाअ़त वाजिब न होती तो मैं कभी अपने घर से न निकलता और मरते दम तक अपने घर ही में रहता। (بحر الدموع، ص39)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर कोई ज़रूरत या शर्ई मजबूरी न हो तो फ़ुज़ूल घूमने फिरने के बजाए घर में रहने ही के फ़ाएदे हैं। ह़दीसे पाक में है : सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! नजात क्या है ? फ़रमाया : ﴿1﴾ अपनी ज़बान को रोक रखो (या'नी अपनी ज़बान वहां खोलो जहां फ़ाएदा हो, नुक़्सान न हो) और ﴿2﴾ तुम्हारा घर तुम्हें किफ़ायत करे (या'नी बिला ज़रूरत घर से न निकलो) और ﴿3﴾ गुनाहों पर रोना इख़्तियार करो। (ترمذی، 4/182، حدیث:2414)

6 फ़ुज़ूल काम

मुर्शिदी ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तौबा करने वालों को फ़रमाते हैं कि हर क़िस्म की नफ़्सानी ख़्वाहिश से मुंह मोड़ कर फ़ुज़ूल कामों से बचें। फ़ुज़ूल कामों से मुराद येह छे (6) काम हैं : ﴾1﴿ फ़ुज़ूल बातें करना ﴾2﴿ फ़ुज़ूल देखना ﴾3﴿ फ़ुज़ूल चलना व घूमना ﴾4﴿ फ़ुज़ूल खाना ﴾5﴿ फ़ुज़ूल पीना ﴾6﴿ फ़ुज़ूल लिबास पहनना। (قوت القلوب، 1/367)

वाक़ेई आज के ज़माने में तन्हाई में ही भलाई है जब कि वोह तन्हाई गुनाहों से मह़फ़ूज़ हो क्यूं कि अगर तन्हाई में मोबाइल या इन्टरनेट वग़ैरा के गुनाहों भरे इस्ति'माल में मसरूफ़ रहे तो ऐसी तन्हाई भी जहन्नम में पहुंचा सकती है। फ़ुज़ूल बैठकें गुनाहों तक पहुंचा देती हैं, ऐसे ही अपनी आंखों को आज़ाद छोड़ देना, फ़ुज़ूल देखने का आ़दी बनाना बद निगाही तक ले जा सकता है। जल्वत हो या ख़ल्वत (या'नी लोगों में रहें या अकेले) **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की यादों में गुम रहें। ज़िक्रो दुरूद करें। तिलावते क़ुरआने करीम की सआ़दत पाएं, FGN चेनल देखें, इ़ल्मे दीन ह़ासिल करें। आप का वक़्त बहुत सारी नेकियों में गुज़रेगा और नामए आ'माल में सवाब का अम्बार जम्अ़ हो जाएगा।

اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : ऐसा आ़लिम कि जिस की मुसल्मानों को ज़रूरत हो और उस से लोगों को नफ़्अ़ पहुंचता हो वोह मेलजोल तर्क कर के ख़ल्वत (या'नी गोशा नशीनी) इख़्तियार न करे। बाक़ी लोग अगर मां बाप, अहलो इ़याल और दीगर हुक़ूक़ुल इ़बाद का ख़याल रखने के साथ साथ अपनी अहम दीनी व दुन्यवी ज़रूरतों से

फ़ारिग़ हो कर बक़िय्या वक़्त तन्हाई में गुज़ारें (जब कि तन्हाई में रहने के आदाब से भी वाक़िफ़ हों[1]) तो उन के लिये नूरुन अ़ला नूर (या'नी सब से बेहतर येही है)। (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 264)

दिल में हो याद तेरी गोशए तन्हाई हो फिर तो ख़ल्वत में अ़जब अन्जुमन आराई हो

(ज़ौक़े ना'त, स. 204)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

रात में इबादत

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इर्द गिर्द बैठे थे कि आप हम से (बत़ौरे आ़जिज़ी) फ़रमाने लगे : ऐ जवानो ! मैं तुम्हारे लिये इ़ब्रत हूं, अ़मल करो क्यूं कि अस्ल अ़मल तो जवानी में होता है।

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब रात का अंधेरा छा जाता तो मुर्शिदी ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه नमाज़ पढ़ने लगते। रात के पहले ह़िस्से में आप पर गिर्या (या'नी रोने की कैफ़िय्यत) त़ारी होने लगती तो उसे दूर करते फिर त़ारी होती फिर दूर करते फिर त़ारी होती फिर दूर करते यहां तक कि जब आप पर गिर्या का ग़लबा हो जाता तो सिस्कियां लेते और रोने लगते। (حلیۃ الاولیاء، 10/131، رقم:14761)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई जवानी बड़ी दीवानी होती है, इस में नफ़्सानी ख़्वाहिशात के ग़लबे की वज्ह से इबादतो रियाज़त बहुत मुश्किल लगती है। नफ़्सो शैत़ान मुकम्मल ज़ोर लगा कर नौ जवान को नेकी

1... लुबाबुल एह़या सफ़ह़ा 163 ता 165 पर गोशा नशीनी का बयान पढ़िये। इस का ख़ूब तफ़्सीली बयान एह़याउल उ़लूम जिल्द 2 में है।

के रास्ते पर न चलने, सुन्नतों पर अ़मल न करने और गुनाहों में मसरूफ़ करने की कोशिश करते हैं। **अल्लाह** करीम अपने नेक बन्दों और औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के सदक़े हमें अपनी ज़िन्दगी के हर दौर (जवानी, अधेड़ पन और बुढ़ापे) में अपनी रिज़ा वाले काम करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और अपनी ना फ़रमानियों और बुरे दोस्तों से बचाए।

हया नहीं है ज़माने की आंख में बाक़ी ख़ुदा करे कि जवानी तेरी रहे बे दाग़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

चिड़िया क़रीब आ गई

ह़ज़रते अह़मद बिन ख़लफ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक दिन मैं ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास आया तो आप ने मुझ से फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें उस चिड़िया के बारे में ह़ैरत अंगेज़ बात न बताऊं जो मेरे हां आती और बरआमदे की मुंडेर पर बैठ जाती। मैं उस के लिये रोटी का छोटा सा टुकड़ा लेता और उसे अपने हथेली में चूरा चूरा करता तो वोह आ कर मेरी उंग्लियों के कनारे पर बैठती और चुगने लगती। एक दिन वोह बरआमदे में आई तो मैं ने उस के लिये रोटी का टुकड़ा ले कर अपनी हथेली में चूरा किया मगर वोह जिस त़रह़ मेरे हाथ में चुगने के लिये आती थी, नहीं आई। मैं ने इस राज़ के बारे में ग़ौरो फ़िक्र किया कि वोह मुझ से मानूस क्यूं नहीं हो रही तो मुझे पता चला कि मैं ने उ़म्दा क़िस्म का नमक खाया था। चुनान्चे मैं ने दिल में कहा : मैं उ़म्दा नमक खाने से तौबा करता हूं, क्या देखता हूं कि वोह चिड़िया मेरे हाथ पर आ बैठी, चूरा खाया और उड़ कर चली गई। (حلیۃ الاولیاء، 10/127، رقم:14741)

अल्लाह वालों की भी क्या शान है, काश ! रिज़ाए इलाही के लिये हम भी अपने नफ़्स को क़ाबू कर के इसे नेक काम करने का आ़दी बनाएं।

औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِم तो नफ़्स की हर बात में मुख़ालफ़त करते थे जैसा कि

ठन्डा पानी

हज़रते सरी सक़ती رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का एक मरतबा रोज़ा था, ताक़ (या'नी दीवार में बनी एक दराज़ या जगह) में पानी ठन्डा होने के लिये पानी पीने का बरतन रख दिया था, नमाज़े अ़स्र के बा'द मुराक़बे में थे कि जन्नती हूरों ने सामने से गुज़रना शुरूअ़ किया। जो सामने आती उस से पूछते : तू किस के लिये है ? वोह किसी एक बन्दए ख़ुदा का नाम लेती। एक आई, उस से भी येही पूछा तो उस ने कहा : "उस के लिये हूं जो रोज़े में पानी ठन्डा होने के लिये न रखे।" फ़रमाया : "अगर तू सच कहती है तो इस बरतन को गिरा दे।" उस ने गिरा दिया, इस की आवाज़ से आंख खुल गई, देखा तो वोह बरतन टूटा पड़ा था।

(روض الریاحین، ص53 ملخصًا, मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 158, الرسالۃ القشیریۃ، ص30)

30 साल से नफ़्स की मुख़ालफ़त

हज़रते सरी सक़ती رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : 30 साल से मेरा नफ़्स इस बात पर झगड़ रहा है कि मैं खजूर के शीरे (या'नी रस) में एक गाजर डुबो कर खा लूं लेकिन मैं ने अभी तक इस की बात नहीं मानी।

(حلیۃ الاولیاء، 10/119، رقم:14693)

ऐ आशिक़ाने औलिया ! मा'लूम हुवा **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे आख़िरत की बाक़ी रहने वाली राहतें और न ख़त्म होने वाली ने'मतों को पाने के शौक़ में अपने नफ़्स को क़ाबू कर के दुन्या की लज़्ज़तों को ठोकर मार दिया करते हैं।

सरवरे दीं लीजे अपने नातुवानों की ख़बर

नफ़्सो शैतां सय्यिदा कब तक दबाते जाएंगे

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 157)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

पाकीज़ा ग़िज़ा खाने के ह़वाले से शोहरत

ह़ज़रते ह़सन बज़्ज़ाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़लाल व पाकीज़ा ग़िज़ा खाने, अपनी ख़ूराक की छानबीन करने और तक़्वा व परहेज़ गारी के ह़वाले से इतने मश्हूर थे कि उन की येह शोहरत ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तक जा पहुंची, जभी आप ने उन के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि "**वोह शैख़ जो पाकीज़ा ग़िज़ा खाने के ह़वाले से मश्हूर हैं।**" (حلیۃ الاولیاء، 10/130، رقم:14760)

तक़्वा की बेहतरीन मिसाल

मेरे मुर्शिद ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने चाहा कि ऐसा लुक़्मा खाऊं जिस में **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से पूछगछ न हो और न उस में मख़्लूक़ का मुझ पर कोई एह़सान हो तो मुझे ऐसे लुक़्मे तक कोई रास्ता नहीं मिला। (حلیۃ الاولیاء، 10/120، رقم:14694)

हम एक दिन मक्के से किसी जगह के लिये निकले, जब जंगल में ठहरे तो मैं ने बहते पानी में सब्ज़ी का एक गुच्छा देखा। चुनान्चे हाथ बढ़ा कर उसे ले लिया और कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मेरे ख़याल में येह ह़लाल था और इस में किसी मख़्लूक़ का भी कोई एह़सान नहीं था। जब मैं ने उसे ले लिया तो किसी देखने वाले ने मुझ से कहा : ऐ अबुल ह़सन ! मैं उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा तो उस के पास भी इस जैसा सब्ज़ी का गुच्छा था, उस ने

मुझ से कहा : वोह दे कर येह ले लो। मैं ने कहा : सब्ज़ी का गुच्छा जो मैं ने पहले लिया है उस में किसी का एह़सान नहीं है और जो तुम दे रहे हो येह बदल है, शायद तुम मुझ पर एह़सान करना चाहते हो और मैं तो वोह चीज़ चाहता हूं जिस में न मख़्लूक़ का एह़सान हो और न **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से पूछगछ। (حلیۃ الاولیاء، 10/120، رقم:14695)

किसी का एह़सान क्यूं उठाएं किसी को ह़ालात क्यूं बताएं

तुम्हीं से मांगेंगे तुम ही दोगे तुम्हारे दर से ही लौ लगी है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

बिज़्नेस मेन हो तो ऐसा हो

ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बादामों का एक "कुर्र" (या'नी अनाज का एक पैमाना) 60 दीनार (सोने के सिक्कों) में ख़रीदा और अपने रोज़ के ह़िसाब लिखने की कॉपी में उस का नफ़्अ़ तीन दीनार लिख दिया, गोया कि उन्हों ने हर दस दीनार पर सिर्फ़ आधा दीनार नफ़्अ़ लेना बेहतर ख़याल फ़रमाया। कुछ ही दिनों में बादामों का एक "कुर्र" 90 दीनार का हो गया एक दिन कमीशन एजन्ट (Commission Agent) आया और उस ने बादाम मांगे, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : ले लो। उस ने पूछा : कितने के ? फ़रमाया 63 दीनार के। वोह भी नेक लोगों में से था, उस ने अ़र्ज़ की : इस वक़्त येह बादाम 90 दीनार के हो चुके हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं ने एक अ़ह्द किया है जिसे मैं हरगिज़ नहीं तोड़ सकता, लिहाज़ा मैं इन्हें 63 दीनार में ही फ़रोख़्त करूंगा। कमीशन एजन्ट ने जवाब दिया : मैं ने भी अपने और **अल्लाह** पाक के दरमियान इस बात का अ़ह्द कर रखा है कि किसी मुसल्मान को धोका नहीं दूंगा। इस लिये मैं आप से

येह बादाम 90 दीनार में ही ख़रीदूंगा। आप رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ भी अपनी बात पर क़ाइम रहे और फ़रमाया : मैं 63 दीनार से ज़ियादा में नहीं बेचूंगा। चुनान्चे न तो उस एजन्ट ने येह बात गवारा की, कि मैं कम क़ीमत में ख़रीदूं और न ही आप तीन दीनार से ज़ियादा नफ़्अ़ लेने पर राज़ी हुए बिल आख़िर उन का सौदा न बन सका और वोह वहां से चला गया।

येह वाक़िआ़ बयान करने के बा'द ह़ज़रते अ़लान अल ख़ियात़ رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जिन लोगों में ऐसी अ़ज़ीम आ़दतें पाई जाएं जब वोह अपने पाक परवर्दगार की बारगाह में दुआ़ के लिये हाथ उठाएं तो उन की दुआ़एं क़बूल क्यूं न हों। **अल्लाह** पाक अपने ऐसे नेक बन्दों की दुआ़एं ज़रूर क़बूल फ़रमाता है। जो **अल्लाह** पाक का हो जाता है **अल्लाह** पाक उस के तमाम मुआ़मलात को ह़ल फ़रमा देता है।

(احیاء العلوم، 2/102۔ عیون الحکایات، ص164 ملخصاً)

अल्लाह पाक की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

मुर्शिदी ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَیْہ के जज़्बए ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम पे लाखों सलाम। वोह ज़माना कैसा प्यारा और उस वक़्त के लोग कितने ईमानदार थे, जब कि आज बड़ा नफ़्सा नफ़्सी का दौर है। अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! आज अपने मुसल्मान भाइयों की हमदर्दी और ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे का गोया जनाज़ा निकल चुका है। ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी, खाने की अहम अश्या मसलन घी, तेल, आटा, चीनी और दालों वग़ैरा का अगर रेट बढ़ जाए तो दुकानदार की तो गोया ईद हो गई, पहले के रेट पर बेचने का सुवाल ही पैदा नहीं होता बल्कि वोह तो मौजूदा बढ़ी हुई क़ीमत

से कुछ रुपै कम लेना भी गवारा नहीं करता। बा'ज़ लोगों की बे ह़िसी इस ह़द तक होती है कि अगर रेट बढ़ने की इत्तिलाअ़ मिल जाए कि फ़ुलां दिन या फ़ुलां तारीख़ से इतना रेट बढ़ जाएगा तो वोह चीज़ को बेचना रोक देते हैं कि रेट बढ़ने के बा'द ज़ियादा मुनाफ़अ़ ले कर बेचेंगे। आह ! एक वोह नेक और ग़रीबों के हमदर्द और ख़ैर ख़्वाह लोग हुवा करते थे और एक अब के ह़ालात हैं।

ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ़ है   उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है

काश ! **अल्लाह** पाक हमारे मुर्शिद ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के सदके़ हमें अपने मुसल्मान भाइयों के साथ ख़ैर ख़्वाही और हमदर्दी का जज़्बा नसीब फ़रमाए। आप के अन्दर जज़्बए ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम किस क़दर था। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं चाहता हूं कि सारी मख़्लूक़ का रन्जो ग़म मेरे दिल पर आ जाए कि वोह सब रन्जो ग़म से फ़ारिग़ हो जाएं। (شریف التواریخ، 1/501)

मख़्लूक़ पर सब से बढ़ कर शफ़ीक़

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने बहुत से मशाइख़ को देखा मगर किसी को ह़ज़रते शैख़ सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के बराबर **अल्लाह** पाक की मख़्लूक़ पर शफ़ीक़ नहीं पाया। (شریف التواریخ، 1/513) ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के जज़्बए ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम के बारे में एक और वाक़िआ़ पढ़िये और अपने अन्दर भी इस जज़्बे को पैदा करने की कोशिश कीजिये।

सारी दुकान का माल ख़ैरात कर दिया

ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं 30 साल से एक बार اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहने पर इस्तिग़फ़ार कर रहा हूं। अ़र्ज़ की गई : वोह कैसे ?

फ़रमाया : एक मरतबा बग़दाद शरीफ़ के बाज़ार में आग लग गई, जिस के सबब तमाम दुकानें जल गईं, ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की दुकान भी उन्हीं दुकानों में थी, किसी ने आ कर मुझे ख़बर दी कि आप की दुकान नहीं जली, मैं ने कहा : "اَلْحَمْدُلِلّٰه !" तो मैं 30 साल से इस बात पर शरमिन्दा हूं कि मैं ने अपने फ़ाएदे पर मुसल्मानों के नुक़्सान को अच्छा जाना । (फ़ौरन आप को एह़सास हुवा कि गोया दूसरों के सामान जलने का अफ़्सोस नहीं हुवा और अपनी दुकान न जलने पर ख़ुशी हुई येह ख़ुशी कैसी ! इस के कफ़्फ़ारे में आप ने) अपनी दुकान की तमाम चीज़ें ग़रीबों में बांट दीं । (الرسالۃ القشیریہ، ص29)

बुज़ुर्गों की मौजूदगी बाइसे बरकत होती है

ह़ज़रते ह़सन बज़्ज़ाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه और ह़ज़रते बिश्र ह़ाफ़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه हमारे यहां (बग़दाद में) थे तो हम येह उम्मीद करते थे कि **अल्लाह** पाक इन बुज़ुर्गों के ज़रीए हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है, फिर इन दोनों का इन्तिक़ाल हो गया और ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मौजूद थे तो मैं येह उम्मीद करता हूं कि **अल्लाह** पाक ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के ज़रीए हमारी ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है । (حلیۃ الاولیاء، 10/130، رقم:14759)

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बारगाहे ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه में अ़र्ज़ करते हैं :

یا سَری آمن اَز سَقط در دوسرا اِمداد کُن

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 329)

या'नी ऐ मेरे मुर्शिद ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ! आप मुझे किसी दूसरे के दरवाज़े पर गिरने से बचा लीजिये, मेरी मदद कीजिये ।

“या सरी सक़ती” के 9 हुरूफ़ की निस्बत से हज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के 9 वाक़िआत

﴾1﴿ या अल्लाह पाक ! इन्हें इयादत का त़रीक़ा सिखा

हज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं त़रसूस में बीमार हो गया। कुछ ऐसे लोग जिन का आना मुझे पसन्द न था मेरी इयादत को आए और इतनी देर तक बैठे कि मैं तंग आ गया। जब वोह वापस जाने लगे तो मुझ से दुआ करने का कहा तो मैं ने हाथ उठा कर येह दुआ मांगी : اَللّٰھُمَّ عَلِّمْنَا کَیْفَ نَعُوْدُ الْمَرْضٰی या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! हम को इयादत करने का त़रीक़ा सिखा दे कि मरीज़ की इयादत कैसे करते हैं। (نفحات الانس، ص54)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की इयादत के वाक़िआत पढ़ने और इयादत का दुरुस्त त़रीक़ा जानने के लिये दा'वते इस्लामी की वेबसाइट से रिसाला “इयादत के वाक़िआत” पढ़िये बल्कि हो सके तो हस्पताल और क्लीनिक वग़ैरा पर अपने मर्हूमीन के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम कीजिये।

﴾2﴿ दुन्या औलियाउल्लाह की ख़ादिम है

हज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बहन एक बार आप के हां आईं तो देखा कि एक बुढ़िया आप के घर में झाड़ू दे रही है और वोह रोज़ाना आप के लिये दो रोटियां ले कर आती है। आप की बहन ने हज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को येह बताया तो हज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने आप से इस बारे में बात की तो आप ने जवाब दिया :

अल्लाह पाक ने दुन्या को मेरा पाबन्द कर दिया है ताकि वोह मुझ पर ख़र्च भी करे और मेरी ख़िदमत भी करे। (जामेअ़ करामाते औलिया, 2/88 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

उन्हें क्या ख़ौफ़ हो उ़क़्बा का और क्या फ़िक्र दुन्या की जमाए बैठे हैं जो दिल पे नक़्शा तेरी सूरत का

(क़बालए बख़्शिश, स. 43)

﴾3﴿ अल्लाह पाक के नज़्दीक काम्याब

ह़ज़रते जुनैद बग़्दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मेरे पास चार दिरहम थे। मैं मुर्शिदी ह़ज़रते सरी सक़्ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : येह चार दिरहम मैं आप की ख़िदमत में पेश करने के लिये लाया हूं। उन्हों ने फ़रमाया : बेटा ! ख़ुश रहो, तुम काम्याब हो, मुझे चार दिरहम की ज़रूरत है, मैं ने **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ की थी : ऐ **अल्लाह** पाक ! चार दिरहम ऐसे शख़्स के हाथ भेज जो तेरे नज़्दीक काम्याब हो। (जामेअ़ करामाते औलिया, 2/89)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

﴾4﴿ अपना मुह़ासबा करने का निराला अन्दाज़

ह़ज़रते सरी सक़्ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (बत़ौरे आ़जिज़ी) फ़रमाते हैं : मुझ पर 30 साल से एक बीमारी छुपी रही। हम कुछ लोग सुब्ह़ सवेरे जुमुआ़ को जाते, सब की अपनी अपनी मख़्सूस जगह थी जो लोगों में मश्हूर थी, हम वहां से कहीं न जाते थे। जुमुआ़ के दिन हमारे पड़ोस में एक शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया, मैं ने चाहा कि उस के जनाज़े में शिर्कत करूं। चुनान्चे

मैं ने उस के जनाज़े में शिर्कत की, इस बिना पर मुझे जुमुआ के लिये अपने वक़्त से देर हो गई। बहर हाल मैं जुमुए के लिये गया और जब मस्जिद से क़रीब हुवा तो मेरे नफ़्स ने मुझ से कहा : अब लोग तुझे देखेंगे कि अपने वक़्त से आज देर से आया है। मुझे बहुत बुरा महसूस हुवा तो मैं ने अपने आप से कहा : तू 30 साल से रियाकार है और तुझे ख़बर भी नहीं हुई, चुनान्चे मैं ने अपनी मख़्सूस जगह छोड़ दी[2] और मुख़्तलिफ़ जगहों पर नमाज़ पढ़ने लगा ताकि मेरी कोई भी जगह मशहूर न हो। (حلیۃ الاولیاء، 10/129، رقم:14753)

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بجاہِ خاتَمِ النّبیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

﴾5﴿ दुआ की बरकत से 40 ह़ज

ह़ज़रते अ़ली बिन अ़ब्दुल ह़मीद ग़ज़ाइरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा मैं ने ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के घर ह़ाज़िर हो कर दस्तक दी, आप दरवाज़े के क़रीब तशरीफ़ लाए तो मैं ने सुना कि आप दुआ कर रहे थे : ऐ **अल्लाह** पाक ! जिस ने मुझे तुझ से ग़ाफ़िल किया तू उसे अपनी याद में मशग़ूल कर दे। वोह कहते हैं : इस दुआ की एक बरकत येह ज़ाहिर हुई कि मैं ने ह़लब शहर (मुल्के शाम) से पैदल 40 ह़ज किये। (الانساب للسمعانی، 9/155) **अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بجاہِ خاتَمِ النّبیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

﴾6﴿ इबादत की तौफ़ीक़ मिल गई

ह़ज़रते अबू इस्ह़ाक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते अ़ली बिन

2... मस्जिद में कोई जगह अपने लिये ख़ास कर लेना कि वहीं नमाज़ पढ़े येह मकरूह है। (فتاوی ہندیہ، 1/108)

अ़ब्दुल ह़मीद ग़ज़ाइरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो मैं ने उन्हें सब से ज़ियादा इ़बादत गुज़ार और कसरत से मुजाहदा करने वाला पाया। वोह दिन रात नमाज़ अदा करते रहते थे लिहाज़ा मैं उन के नमाज़ से फ़ारिग़ होने का इन्तिज़ार करने लगा मगर मेरी उन से मुलाक़ात न हो सकी तो मैं ने उन से कहा कि मैं अपने मां बाप, बीवी बच्चों और अपने शह्र को छोड़ कर आप के पास आया हूं लिहाज़ा आप थोड़ी देर के लिये नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर मुझे **अल्लाह** पाक का अ़ता किया हुवा इ़ल्म सिखाएं। तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मुझे ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की दुआ़ है, मैं उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और दरवाज़ा खटखटाया तो दरवाज़ा खोलने से पहले मैं ने उन्हें येह दुआ़ करते हुए सुना कि **या अल्लाह** पाक! जो शख़्स मुझे तेरी बारगाह में दुआ़ करने से ग़ाफ़िल करने के लिये मेरे पास आया है तू उसे अपनी मह़ब्बत में मश्ग़ूल कर के मुझ से ग़ाफ़िल कर दे। तो जब मैं ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की बारगाह से वापस लौटा तो नमाज़ और **अल्लाह** पाक के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहना मेरा पसन्दीदा काम बन गया, इस लिये मैं उस नेक बुज़ुर्ग की दुआ़ की बरकत से इन कामों के इ़लावा किसी चीज़ के लिये फ़ारिग़ नहीं होता।

ह़ज़रते अबू इस्ह़ाक़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने उन की बातों में ग़ौर किया तो मुझे उन की बातें ग़मज़दा दिल और आ़जिज़ करने वाली बे क़रारी से निकलती हुई नज़र आईं और वोह मुसल्सल आंसू बहा रहे थे। (بحر الدموع، ص115) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

﴾7﴿ ह़क़ीक़ी बन्दे और सच्चे मह़बूब

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْہ के हां सो रहा था कि आप رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने मुझे जगाया और फ़रमाने लगे : ऐ जुनैद ! मैं ने देखा कि गोया मैं **अल्लाह** पाक की बारगाह में खड़ा हूं और मुझ से इर्शाद फ़रमाया गया : "ऐ सरी ! मैं ने मख़्लूक़ पैदा की तो सब मेरी मह़ब्बत का दा'वा करते थे । फिर मैं ने दुन्या पैदा की तो नव्वे फ़ीसद भाग गए (या'नी दुन्या की त़रफ़ चले गए) और दस फ़ीसद बाक़ी रह गए । फिर मैं ने जन्नत पैदा की तो बक़िय्या में से भी नव्वे फ़ीसद भाग गए (या'नी जन्नत ह़ासिल करने में लग गए) और सिर्फ़ दस फ़ीसद बच गए । फिर जब मैं ने उन पर ज़र्रा भर आज़्माइश उतारी तो उस बाक़ी रह जाने वाली ता'दाद का भी सिर्फ़ दस फ़ीसद बचा और बाक़ी भाग गए (या'नी मेरी रिज़ा पर राज़ी न रहे) । मैं ने बाक़ी रहने वालों से पूछा : "न तो तुम ने दुन्या को चाहा, न जन्नत त़लब की, न ही आज़्माइश से भागे । आख़िर तुम क्या चाहते हो ? और तुम्हारा मक़्सूद क्या है ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "हमारा मक़्सूद तू ही तू है, अगर तू हमारा इम्तिह़ान लेगा तब भी हम तेरी मह़ब्बत को न छोड़ेंगे ।" मैं ने उन से कहा : "मैं तुम्हें ऐसी ऐसी मुसीबतों और आज़्माइशों में मुब्तला करूंगा कि पहाड़ों को भी जिन के बरदाश्त की त़ाक़त नहीं, तो क्या तुम उन पर सब्र कर लोगे ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं, ऐ मौला ! अगर तू आज़्माइश में मुब्तला करने वाला है तो जैसे चाहे हमे आज़्मा ले ।" (फिर फ़रमाया :) ऐ सरी ! येही मेरे ह़क़ीक़ी बन्दे और सच्चे मह़बूब हैं ।" (الروض الفائق، ص256۔ شعب الایمان، 1/374، حدیث:436 ملخصاً)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

ख़ुशियों में मसर्रत में आसाइशो राहत में असरारे महब्बत का इज़्हार नहीं होता
वोह इश्क़े हक़ीक़ी की लज़्ज़त नहीं पा सकता जो रन्जो मुसीबत से दोचार नहीं होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 164)

﴾8﴿ मुर्शिदी की एह़तियात़ पे लाखों सलाम

ह़ज़रते अ़ली बिन हुसैन बिन ह़र्ब رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को खांसी थी, मेरे वालिदे मोह़तरम ने दवा दे कर मुझे उन के पास भेजा, उन्हों ने फ़रमाया : इस की क़ीमत क्या है ? मैं ने कहा : वालिद साह़िब ने मुझे कुछ नहीं बताया। फ़रमाया : उन्हें मेरा सलाम देना और कहना कि 50 साल से लोगों को हम सिखा रहे हैं कि वोह अपने दीन के बदले कुछ न खाएं तो आज क्या हम अपने दीन के बदले खा लेंगे। (حلیۃ الاولیاء، 10/120، رقم:14700) ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : येह कमीना पन है कि आदमी अपना दीन बेच कर खाए। (حلیۃ الاولیاء، 10/120، رقم:14699) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

﴾9﴿ शिकायत कैसे करूं ?

ह़ज़रते जुनैद बग़्दादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बीमार हुए और मैं उन की इ़यादत के लिये ह़ाज़िर हुवा तो मैं ने अ़र्ज़ की : आप कैसा मह़सूस कर रहे हैं ? फ़रमाया : मैं अपनी तक्लीफ़ की शिकायत अपने त़बीब से कैसे करूं क्यूं कि मुझे जो तक्लीफ़ आई वोह मेरे त़बीब ही की त़रफ़ से है (या'नी **अल्लाह** पाक ही की त़रफ़ से येह आज़्माइश आई है)। फिर मैं ने पंखा उठाया ताकि उन्हें हवा दे सकूं तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : जिस का पेट अन्दर से जल रहा हो वोह भला

पंखे की हवा (से सुकून) कैसे पा सकता है। फिर आप ने अ़रबी में कुछ अश्आ़र पढ़े जिस में येह भी था : **या अल्लाह** पाक ! अगर किसी चीज़ में मेरे लिये कुछ राह़त है तो जब तक मेरी ज़िन्दगी थोड़ी सी भी बाक़ी है मुझ पर उस के ज़रीए़ एह़सान फ़रमाता रह। (حلیۃ الاولیاء 10/291، رقم:15270) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मुरीद व जा नशीन को नसीह़त

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मुझे दुआ़ दी : **अल्लाह** तुम्हें ह़दीस दान बना कर फिर सूफ़ी बनाए और ह़दीस दान होने से पहले तुम्हें सूफ़ी न करे।

इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की इस दुआ़ की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : जिस ने पहले ह़दीस व इ़ल्म ह़ासिल कर के तसव्वुफ़ में क़दम रखा वोह काम्याब हुवा और जिस ने इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने से पहले सूफ़ी बनना चाहा उस ने अपने आप को हलाकत में डाला وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰى। (शरीअ़तो त़रीक़त, स. 20)

इज़्ज़ो इन्किसार की इन्तिहा

ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه आजिज़ी करते हुए फ़रमाते हैं : मैं रोज़ाना अपनी नाक को कई बार देखता हूं कि कहीं गुनाहों की वज्ह से मेरा चेहरा काला तो नहीं हो गया। ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को फ़रमाते सुना : मैं किसी पर अपने आप को फ़ज़ीलत नहीं देता। (حلیۃ الاولیاء 10/128، 119)

आप फ़रमाते हैं : मेरी ख़्वाहिश है कि मैं बग़दाद के इलावा किसी और जगह इन्तिक़ाल करूं क्यूं कि मुझे डर है कि अगर मेरी क़ब्र ने मुझे क़बूल न किया तो कहीं मैं लोगों के सामने रुस्वा न हो जाऊं। (الرسالۃ القشیریۃ، ص29)

अल्लाहु अक्बर ! अल्लाह वालों की आ़जिज़ी मरह़बा सद मरह़बा ! बुज़ुर्गों ने आ़जिज़ी की और ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़ बुलन्दी पाई । जैसा कि ह़दीसे पाक में है : مَنْ تَوَاضَعَ لِلّٰهِ رَفَعَهُ الله या'नी जो भी **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त के लिये आ़जिज़ी करता है, **अल्लाह** पाक उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है। (شعب الایمان، 6/276، حدیث:8140۔ مسلم، ص1071، حدیث:6592 معناً)

बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की आ़जिज़ी का असर है कि आज सदियां गुज़रने के बा'द भी इन की बुलन्दी व रिफ़्अ़त के चरचे हैं, इन की शानें बयान की जा रही हैं और इन के ईसाले सवाब की मह़फ़िलें सज रही हैं। जो दरख़्त फलदार होता है वोह झुका होता है जब कि तकब्बुर करने, अकड़ने वाले की मिसाल कांटेदार दरख़्त की सी है जो न झुकता है और न उस से फ़ाएदा ह़ासिल किया जाता है, लिहाज़ा झुक जाएं, इ़ज़्ज़त बढ़ेगी और फल वाले बन जाएंगे।

फ़ख़्रो ग़ुरूर से तू मौला मुझे बचाना या रब ! मुझे बना दे पैकर तू आ़जिज़ी का

(वसाइले बख़्शिश, स. 178)

तौबा पर इस्तिक़ामत पाने का नुस्ख़ा

मुर्शिदी ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : तौबा करने वाले को सब से पहले गुनाहगारों (या'नी बुरों की सोह़बत) से दूर हो जाना चाहिये और वोह गुनाह पर मजबूर कर देने वाले हर काम को छोड़ दे नीज़ नफ़्सानी

ख़्वाहिश पर अ़मल करने की बजाए औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की सीरत पर अ़मल करने को जान से बढ़ कर अ़ज़ीज़ बना ले। (قوت القلوب، 1/367 ملتقطاً)

सच्ची तौबा की पहचान

ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : तौबतुन्नुसूह़ (या'नी सच्ची तौबा) अपने आप और अपने मुसल्मान भाइयों को नसीह़त करने के बिग़ैर सह़ीह़ नहीं होती क्यूं कि जिस की तौबा सह़ीह़ होती है वोह पसन्द करता है कि दूसरे लोग भी उस की त़रह़ (या'नी गुनाहों से तौबा करने वाले) हों। (تفسیر ثعلبی، پ28، التحریم، تحت الآیۃ:8، 9/350)

परिन्दों का क़ैदी

ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर कोई शख़्स बाग़ में जाए जहां हर क़िस्म के दरख़्त हों, उन पर हर क़िस्म के परिन्दे हों और हर परिन्दा जुदा ज़बान में उस शख़्स से कलाम करे और कहे : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللّٰه" या'नी : ऐ **अल्लाह** के वली ! तुम पर सलामती हो।" येह सुन कर अगर उस का नफ़्स राह़त महसूस करे तो वोह उन परिन्दों का असीर (या'नी क़ैदी) है। (احیاء العلوم، 1/170)

आख़िरी वक़्त

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं सुन्नत के मुत़ाबिक़ हर तीन दिन के बा'द ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की इ़यादत किया करता था। एक दिन मैं उन के पास आया तो आप का आख़िरी वक़्त था। मैं आप के सिरहाने बैठ कर रोने लगा, मेरे आंसू आप के चेहरे पर गिरे तो आप ने आंखें खोलीं और मेरी त़रफ़ देखा। मैं ने अ़र्ज़ की : मुझे कुछ नसीह़त कीजिये ! फ़रमाया : बुरे लोगों की सोह़बत में न बैठना और नेक लोगों की

सोह़बत के सबब भी **अल्लाह** पाक से ग़ाफ़िल न होना । फिर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करते हुए दुन्या से रुख़्सत हो गए ।

(حلیۃ الاولیاء10/129، رقم:14750)

6 रमज़ानुल मुबारक 253 हिजरी को अज़ाने फ़ज्र के बा'द आप का इन्तिक़ाल शरीफ़ हुवा और आप का मज़ार शरीफ़ बग़्दाद शरीफ़ में शूनीज़िय्या के क़ब्रिस्तान में है । (تاریخ بغداد،9/190)

ह़ाशिये में नाम लिखा था

मुर्शिदी ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के जनाज़े में शरीक होने वाले एक शख़्स ने किसी रात आप को ख़्वाब में देख कर पूछा : ''مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला किया ?'' फ़रमाया : ''**अल्लाह** पाक ने मेरी और मेरे जनाज़े में शरीक होने वालों की मग़्फ़िरत फ़रमा दी ।'' उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : ''हुज़ूर मैं भी आप के जनाज़े में शरीक था ।'' तो आप ने एक काग़ज़ निकाल कर उस में देखा लेकिन उस में उस का नाम न था । उस ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर बेशक मैं ह़ाज़िर हुवा था । तो आप ने दोबारा नज़र की तो क्या देखते हैं उस का नाम ह़ाशिये (काग़ज़ के कनारे) में लिखा हुवा था । (تاریخ ابن عساکر،20/198، رقم:2406)

दीदारे इलाही

ह़ज़रते या'क़ूब बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब में ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को देख कर पूछा : **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला किया ? फ़रमाया : उस ने मुझे अपने दीदार की इजाज़त अ़ता फ़रमाई । (حلیۃ الاولیاء9/201، رقم:13694)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का दिल ख़ुश कीजिये

ह़स्बे साबिक़ ज़िम्मेदारान को मुकम्मल माहे रमज़ानुल मुबारक के ए'तिकाफ़ के लिये राज़ी करें और मुझे ख़ुश ख़बरियां सुनाएं।